%%A. D. 1190‒1436

%%Ś. 1112‒1358

%%( From 1184—19-9-1264 A. D.)

%%p. 248

No. 154

Lakshmī Narasiṃha Temple at Śiṃhāchalam<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 885; A. R. No. 288 of 1899;

I. M. P. Vol. III, P. 1679, No. 117 )

Ś. 1208 & Ś 1210

(१।) स्वस्ति श्री शाकवर्षे वसु-र-रविमिते स्वच्छकौलीरमास

द्वादश्यां सद्वसिष्ठान्वयजलधि-

(२।) विधोस्तंव्विनेतुगृ(र्गृ)हिण्याद्दत्तंद्दीपार्थक्लुप्तयैन्नरहरि-

पुरतो वैकुलल्यंवयाद्यं

(३।) माढाषट्कं सचिह्नत्रयमिह च परत्रात्मनि स्रेयसाय ।।

स्वस्ति श्री [।।] शकवर्षवु-

(४।) लु १२०८ गुनेंटि कवकटक शुक्ल द्वादशियू वृहस्पति-

वारमुन<2> वसिष्टगो-

(५।) त्रमुन तंव्विनायकुनि भार्य्या आइन कोललकम्म तन

वंशाभिवृद्धिगा-

(६।) नु श्रीनरसिहनाथुनि सन्निधियंद्दु अखंडदीपार्त्थमु-

सेल्लुटकु अ-

(७।) रु माडयु मूंडु चिन्नालु श्रीभंडार प्रवेशमु चेसिद्दिगान ई दी-

(८।) पार्थ्थमु आचंद्रार्क्कमु चेल्लंग्गलयदि ई धर्म्मवु श्रीवैष्णव

रक्ष श्री श्री श्री

<1. In the twenty-first niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The donor of this inscription made two grants. The first one was made on the 4th July, 1286 A. D., Thursday.>

%%p. 249

(९।) शत्रुणापि [कृ]तो धर्म्मः प(पा)लनीय्यो मनीषिभिः

शत्रुरेव हि शत्रुस्याध(द्ध)म्म(र्म्मः)श-

(१०।) त्रुर्न्न कस्यचित् । शकवरुषंवुलु १२१० गुनेंटि जेष्ट

द्वादशियु पंडितवार

(११।) मुनांडु<\*> वसि(शि)ष्टगोत्रुलैन तंव्विनायकु भार्य्या कोललम्म

तन संताना-

(१२।) [भि]व्रि(वृ)द्धिगानु मुन्नु पेटिन अरदीपान पै गंडलु

आरु माडयु रेंडु चिन्ना-

(१३।) लुंगा नेरुदीपमु ओक्कटिकि श्रीभंड(डा)र[मुन]ओड्कु गं-

(१४।) डमाडलु १२ नि ५ नि अम्मजीय्यलसन्न(न्नि)दि(धि) आचं-

(१५।) द्रार्क्कस्ताइगा चेल्ल ग्ग[ल]दु ई अम धर्म्मवु श्रीवैष्णव रक्ष

(१६।) ई यम कोडुकु माधवनायकु तनकु सं-

(१७।) तानाभिवृधि(द्धि)गानु श्रीनरसिह्यनाथुनिकि

(१८।) पेट्टिन पुष्पवाटिक निवंद्ध १ नि नित्यमु सेवंत्ति-

(१९।) तिरुमाल चातुटकु श्रीभडारमुन ओड्कु प्रांत्त-

(२०।) मलचिन्नलु पंदोमिदिपादिक ११ ई धर्म्म-

(२१।) वु श्रीवैष्णव रक्ष ।। श्री श्री श्री [।।]

<\* The second grant was made two years after the first one. It gives no indication about the fortnight. But, probably the corresponding date is the 28th July, 1288 A. D. Wednesday, when the dvādaśi tithi started at about 8.30 A. M.>